Date / /

CHAPTER-10

अल्पाधिकार

Q- अल्पाधिकार से आप क्या समझते हैं? अल्पाधिकार की दशायों में मूल्य व उत्पादन के निर्णय किस प्रकार किये जाते हैं? समझाइये?

अल्पाधिकार का अर्थ एवं परिभाषायें

अल्पाधिकार अपूर्ण प्रतियोगिता की वह स्थिति है। जिसमें किसी वस्तु के बहुत कम विक्रेता होते हैं। तथा प्रत्येक विक्रेता कुल पूर्ति के बड़े भाग पर नियन्त्रण रखता है। और वस्तु के मूल्य को प्रभावित कर सकता है। अल्पाधिकार में फर्मों या विक्रेताओं की संख्या सीमित होने के कारण एक फर्म द्वारा लिये गये निर्णय का प्रभाव उसकी प्रतिद्वंदी फर्मों पर पड़ता है। तथा प्रतिद्वंदी फर्मों के निर्णय का प्रभाव इस पर पड़ता है।

परिभाषायें

1. श्रीमती जॉन रॉबिन्सन के अनुसार, "अल्पाधिकार एकाधिकार तथा पूर्ण प्रतियोगिता की मध्यवर्ती स्थिति है। जिसमें विक्रेताओं की संख्या एक से अधिक होती है। परन्तु इतनी अधिक भी नहीं होती कि बाजार कीमत पर किसी एक के प्रभाव को न्यूनतम बना दे।

2. प्रो० मेयर्स के अनुसार, " अल्पाधिकार बाजार की वह स्थिति है। जिसमें विक्रेताओं की संख्या इतनी कम होती है। कि प्रत्येक विक्रेताओं की पूर्ति का बाजार कीमत पर समुचित प्रभाव पड़ता है। और प्रत्येक विक्रेता इस बात से परिचित होता है।

अल्पाधिकार की विशेषताएँ

अल्पाधिकार की विशेषतायें निम्नलिखित है।
विक्रेताओं की सीमित संख्या :- अल्पाधिकार में विक्रेताओं की संख्या बहुत कम होती है। तथा प्रत्येक विक्रेता मूल्य एवं उत्पादन को प्रभावित कर सकता है,

समरूप वस्तुएँ :- अल्पाधिकारी लगभग समरूप वस्तुओं का अथवा विभेदित वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं।
माँग वक्र की अनिश्चितता :- अल्पाधिकार बाजार में सभी फर्म में परस्पर निर्भर होती है। इसीलिये फर्म का माँग अथवा लागत वक्र अनिश्चित होता है।
तीव्र मूल्य प्रतियोगिता :- अल्पाधिकार के अन्तर्गत सभी फर्म में तीव्र मूल्य प्रतियोगिता अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करती है।
मूल्य स्थिरता :- अल्पाधिकारी स्थिति में कीमत स्थिरता पाई जाती है। मूल्य युद्ध के भय से कोई भी फर्म मूल्य परिवर्तन पसन्द करती नहीं है।
विज्ञापन एवं विक्रय संवर्द्धन क्रियायें :- इस स्थिति में फर्मों द्वारा विज्ञापन एवं विक्रय संवर्द्धन क्रियाओं पर बहुत अधिक व्यय किया जाता है।

अल्पाधिकार के अन्तर्गत मूल्य एवं उत्पादन निर्धारण :-
इस स्थिति में मूल्य निर्धारण की निम्नलिखित दशायें पायी जाती है।
स्वतन्त्र कीमत निर्धारण :- जब सभी फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तु अलग-अलग होती है। तो प्रत्येक फर्म अपनी स्वतन्त्र मूल्य नीति अपना सकती है। अर्थात फर्म बिना दूसरी फर्मों के प्रभाव या हस्तक्षेप

के स्वतन्त्रता पूर्वक मूल्य का निर्धारण कर सकती है। लेकिन यदि सभी फर्मे समरूप वस्तु का उत्पादन करती है। तो सभी फर्मे समान मूल्य निर्धारित करेगी। अन्यथा कीमत युद्ध के कारण उत्पादन एवं कीमत मे अनिश्चितता बनी रहेगी।

गुटबन्दी के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण :- स्वतन्त्र मूल्य निर्धारण नीति के परिणाम स्वरूप जब फर्मो के बीच अनिश्चितता का अल्पाधिकारी फर्मो के बीच गुटबन्दी या कार्टेल को जन्म देती है। गुटबन्दी मे फर्मो के बीच उत्पादन तथा कीमत निर्धारण के लिये प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे समझौता हो जाता है। इस समझौते का उद्देश्य अल्पाधिकार के अन्तर्गत विभिन्न फर्मो के कार्टेल अथवा संघ का निर्माण करता है, ऐसी संघ की शक्ति एकाधिकारी शक्ति से मिलती जुलती है संघ के अन्तर्गत फर्मो द्वारा वस्तु की एक ऐसी कीमत निर्धारित की जाती है। जो उद्योग के लाभ को अधिकतम कर सकती है।

Scanned by CamScanner